कथा सरिता

सब कहीं और!!!

इजीप्शियन फकीर से परमात्मा प्रसन्न हो गये। बहुत प्रसन्न हो गये तो उस फकीर को कहा कि तुझे जो चाहिए वह मांग ले। उसने कहा कि आपकी जो मर्ज़ी हो! तो कहते हैं, परमात्मा ने उसे एक फल दे दिया और कहा कि इसे जो खा लेगा, वह अमर हो जाएगा। उस फकीर ने परमात्मा से पूछा कि दो आदमी खाएं, तो दो हो सकते हैं? परमात्मा ने कहा, नहीं, सिर्फ एक!

उस फकीर का अपने शिष्य से बड़ा प्रेम था। उसने सोचा कि अगर मैं अमर हो गया और शिष्य मर गया, कोई सार नहीं है। उसके बिना तो मेरा कोई सुख ही नहीं है। उसने शिष्य को कहा कि तू यह ले ले। तू अमर हो जा। पर उस शिष्य का एक लड़की से प्रेम था। उसने सोचा, मैं अकेला अमर हो गया, तो बिल्कुल बेकार! वह उस फल को लड़की को दे आया। पर उस लड़की का गांव के एक सिपाही से प्रेम था। उसने कहा कि मैं अमर हो गई तो! वह उस सिपाही को दे आई। लेकिन उस सिपाही का लगाव राजा की स्त्री से लगा हुआ था। वह रात को जाकर फल उसे दे आया। उस स्त्री ने सोचा कि मैं अगर खाकर अमर हो जाऊं, तो मेरे बेटे का क्या होगा? उसका भारी लगाव, उसने बेटे को दे दिया। बेटे का अपने बाप से बहुत प्रेम था। उसने कहा, मैं तो ठीक, लेकिन पिता बुज़ुर्ग हुए। उनकी मौत करीब है। मैं तो अभी इसके बिना भी बहुत दिन जी लूंगा। उसने पिता को दे दिया। लेकिन पिता फकीर का भक्त था; उसी फकीर का। उसने सोचा कि हमारे रहने न रहने का क्या सवाल! वह फकीर रहे ज़मीन पर तो हज़ारों के काम आएगा। उसने जाकर फकीर के चरणों में फल रख दिया। फकीर ने फल देखा। उसने कहा, यह फल आया कैसे तुम्हारे पास!

भावार्थ ये है कि सब कहीं और जी रहे हैं, सब कहीं और! कोई वहां नहीं जा रहा है जहाँ है। कहीं और सब दौड़ रहे हैं किसी और के लिए। सब भागे हुए हैं; कोई खड़ा हुआ नहीं है।

प्रार्थना का प्रभाव...

यह घटना बड़ौदा के एक वरिष्ठ डॉक्टर की आपबीती है जिसने उनका जीवन बदल दिया। वे हार्ट स्पेशियलिस्ट हैं, उनके अनुसार...

एक दिन मेरे पास एक दम्पत्ति अपनी छः साल की बच्ची को लेकर आए। निरीक्षण के बाद पता चला कि उसके हार्ट में पूर्ण रूप से clogging हो चुकी है। मैंने अपनी पूरी टीम से विचार-विमर्श करने के बाद उस दम्पत्ति से कहा कि ओपन हार्ट सर्जरी के बाद बचने का सिर्फ 30प्रतिशत चांस है, नहीं तो बच्ची के पास तीन महीने का समय है। माता-पिता भावुक होकर बोले कि वे सर्जरी का चांस लेंगे।

सर्जरी के पाँच दिन पहले बच्ची को एडमिट कर लिया गया। उसकी माँ को प्रार्थना में अटूट विश्वास था। वह सुबह शाम बच्ची को यही कहती कि भगवान तुम्हारे हार्ट में रहते हैं, वे तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे।

सर्जरी के दिन मैंने उस बच्ची से कहा, फिक्र मत करो, तुम सर्जरी के बाद बिल्कुल ठीक हो जाओगी। उस बच्ची ने कहा, डॉक्टर, मुझे कोई चिंता नहीं क्योंकि भगवान मेरे दिल में रहता है, लेकिन सर्जरी में आज जब मेरा हार्ट ओपन करोगे तो देखकर बताना भगवान कैसे दिखते हैं।

ऑपरेशन के दौरान पता चल गया कि कुछ नहीं हो सकता। बच्ची को बचाना असंभव है। हार्ट में ब्लड की एक बूंद भी नहीं आ रही थी। निराश होकर मैंने अपनी टीम से वापस स्टिच करने का आदेश दिया। तभी मुझे बच्ची की आखिरी बात याद आई और मैं अपने रक्त भरे हाथों को जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि हे ईश्वर! मेरा सारा अनुभव तो बच्ची को बचाने में असमर्थ है पर यदि आप इसके हृदय में विराजमान हो तो आप ही कुछ कीजिए। यह मेरी पहली अश्रुपूर्ण प्रार्थना थी। इसी बीच मेरे जूनियर डॉक्टर ने मुझे कोहनी मारी। मैं चमत्कार में विश्वास नहीं करता था, पर मैं स्तब्ध हो गया यह देखकर कि हार्ट में ब्लड की सप्लाई शुरु हो गई। मेरे 60 साल के करियर में ऐसा पहली बार हुआ था।

ऑपरेशन सफल हो गया पर मेरा जीवन बदल गया। मैंने बच्ची से कहा, भगवान को देखने की मेहनत मत करो क्योंकि उसे देखा नहीं जा सकता, उसे बस महसूस किया जा सकता है।

इस घटना के बाद मैंने अपने ऑपरेशन थियेटर में प्रार्थना का नियम निभाना शुरु कर दिया। मैं यह अनुरोध करता हूँ कि सभी को अपने बच्चों में प्रार्थना का संस्कार डालना ही चाहिए।

गुब्बारे वाला...

एक आदमी गुब्बारे बेचकर जीवन-यापन करता था। वह गाँव के आस-पास लगने वाली हाटों में जाता और गुब्बारे बेचता। बच्चों को लुभाने के लिए वह तरह-तरह के गुब्बारे रखता, लाल, पीले, हरे, नीले... और जब कभी उसे लगता कि बिक्री कम हो रही है तो वह झट से एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता, जिसे उड़ता देखकर बच्चे खुश हो जाते और गुब्बारे खरीदने के लिए पहुँच जाते।

इसी तरह एक दिन वह हाट में गुब्बारे बेच रहा था और बिक्री बढ़ाने के लिए बीच-बीच में गुब्बारे उड़ा रहा था।

पास ही खड़ा एक छोटा बच्चा ये सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहा था। इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक `सफेद' गुब्बारा उड़ाया, वह तुरंत उसके पास पहुंचा और मासूमियत से बोला- `अगर आप ये `काला' वाला गुब्बारा छोड़ेंगे... तो क्या वो भी ऊपर जायेगा?'

गुब्बारे वाले ने थोड़े अचरज के साथ उसे देखा और बोला, `हाँ बेटा! बिल्कुल जाएगा। गुब्बारे का ऊपर जाना इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि वो किस रंग का है बल्कि इसपर निर्भर करता है कि उसके अंदर क्या है।'

दोस्तों! गुब्बारेवाले की यह बात हम इंसानों पर भी लागू होती है। ठीक इसी तरह कि कोई अपनी ज़िन्दगी में कौन सी ऊँचाई प्राप्त करेगा, ये उसके बाहरी रंग-रूप पर निर्भर नहीं करता है। बल्कि ये इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अंदर कौन से गुण-अवगुण हैं। अर्थात् हमारे आंतरिक गुण और योग्यता ही हमारी प्रगति के मकाम तय करते हैं।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ए.सी.जे.एम. ज्योत्सना जी, तहसीलदार रामनारायण जी, राष्ट्रीय कवि निर्झर जी, ए.सी.जे.एम. उमा शंकर, समाजसेवी राधेश्याम जी, विधायक एस.के.बी. झउलाल, कवि समर्थ, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. निधि व ब्र.कु. लक्ष्मी।

सीतापुर-उ.प्र.। शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डिप्युटी जेलर के साथ ब्र.कु. योगेश्वरी, ब्र.कु. रश्मि व अन्य।

तोशाम-हरियाणा। सर्व धर्म सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला पार्षद भूपेंद्र भोलू, पूर्व जिला पार्षद सत्यवान श्योराण ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. रोशनी व अन्य।

वाराणसी-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित त्रिदिवसीय `परमात्म अनुभूति आध्यात्मिक प्रवचन एवं राजयोग शिविर' का उद्घाटन करते हुए महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. पृथ्वीश नाग, ब्र.कु. प्रभा मिश्रा, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन, गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बी.एम. शुक्ला, महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया के पूर्व संयुक्त सचिव डॉ. के. सिरी सुमेध थेरो व अजीत सिंह बग्गा।

चैनपुर-सिवान(बिहार)। शिव जयंती महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए थाना प्रभारी, जे.डी.यू. नेता अजय सिंह, ब्र.कु. सुधा, विधायक कविता सिंह व अन्य।

रादौर-हरियाणा। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य संसदीय सचिव व विधायक श्याम सिंह राणा को ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. राज बहन व ब्र.कु. राजू।